

अन्तिभू (अन्ति + भू adj.) adj. vor Augen seind, augenscheinlich: सत्य-
स्यान्तिभूवा यथा VS.23, 29.

अन्तिभेषज (अन्ति + भेषज) m. Name eines Baumes (परिकालोद्य) RĪĠAN.
im ÇKDr.

अन्तिभुव (अन्ति + भू) n. sg. die Augen und die Brauen P. 5, 4, 77. gaṇa
राजदत्तादि, Vop. 6, 8.

अन्तिपत् (3. अ + तिपत् part. praes. von ति wohnen) adj. nicht woh-
nend, wohnungslos, unstät: तिपत्तं त्वमन्तिपत्तं कृपोति (इन्द्रः) RV. 4, 17, 13.

अन्तिलोमन् (अन्ति + लोमन्) n. Augenwimpern AK. 3, 4, 123.

अन्तिव 1) m. Name einer Pflanze, *Hyperanthera (Guilandina) Mo-
ringa* (शोभाञ्जनवृत्त) BHAR. zu AK. im ÇKDr. — n) Meersalz id. — Vgl.
अन्तिव.

अन्तिविकृषात (अन्ति + विकृषात) n. Seitenblick H. 578.

अन्तिक m. = अन्तिक RATNAM. im ÇKDr.

अन्तियमाणा (3. अ + तीयमाणा part. praes. pass. von ति vergehen) adj.
unvergänglich: यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यन्तियमाणा स्वधया मर्दन्ति RV.
4, 154, 4. शतधारमुत्समन्तियमाणा 3, 26, 9. प्रजावत्सं रयिमन्तियमाणा 4V.
7, 20, 3.

अन्तिव (3. अ + तीव) 1) adj. nicht berauscht, nüchtern H. an. 3, 693.
MED. v. 31. — 2) m. Name einer Pflanze, *Hyperanthera (Guilandina)*
Moringa AK. 2, 4, 2, 11. H. 1134. MED. v. 31. — 3) n. Meersalz AK. 2,
9, 41. H. 941. an. 3, 693. MED. v. 31. — Vgl. अन्तिव.

अन्तु m. eine Art Netz: अन्तुमोपशं विततं सकृत्तानं विषूवति । अन्तुद्व-
मभिरिक्तं ब्रह्मणा वि चतमसि ॥ AV. 9, 3, 8. आ वा दानाय ववृतीय दस्रा
गोरोक्षेण तौद्यो न जित्रिः । अन्तुः तौषां संचते माहिना वां जूषां वामन्तु-
रुक्षो यजत्रा ॥ RV. 1, 180, 5. इन्द्रश्चान्तुजालाभ्यां शर्व सेनाममू र्क्षम् AV.
8, 8, 18.

अन्तुद्र (3. अ + त्नुद्र) 1) adj. nicht klein u. s. w. — 2) ÇIVA, Çiv.

अन्तुध् (3. अ + त्नुध्) f. Nicht-Hunger, Sattsein VS. 18, 10.

अन्तुर्थ्य (3. अ + त्नुर्थ्य) adj. keinen Hunger zulassend: उपरूता भूर्तिघनाः
सखायः स्वाडसंमुदः । अन्तुर्थ्या अन्तुर्थ्याः स्तु गृक्षा मास्मिद्धिभीतन ॥ AV. 7,
60, 4, 6.

1. अन्तेत्र (3. अ + तेत्र) n. ein unfruchtbares Feld: अन्तेत्रे वीजमुत्सृष्ट-
मन्तरेव विनश्यति M. 10, 71.

2. अन्तेत्र (3. अ + तेत्र) adj. ohne Felder, ungebaut: तद्दानेत्रतरमिवास
ÇAT. Br. 1, 4, 4, 15.

अन्तेत्रज्ञ (3. अ + तेत्रज्ञ) adj. Bildung des Nom. abstr. P. 7, 3, 30.

अन्तेत्रविद् (3. अ + तेत्रविद्) adj. der sich nicht zurechtzufinden weiss:
यज्ञा सूर्य स्वर्भानुस्तममाविध्यदासुरः । अन्तेत्रविद्यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः ॥
RV. 5, 40, 5. अन्तेत्रवित्तेत्रविद् ह्यप्राट् प्रैतिं तेत्रविदानुशिष्टः । एतद्दे भद्र-
मनुशासनस्योत सृतिं विन्दत्यञ्जसानीम् ॥ 10, 32, 7.

अन्तेत्रिन् (3. अ + तेत्रिन्) adj. der kein Feld besitzt: ये ऽन्तेत्रिणो वीज-
वतः परन्तेत्रप्रवापिणाः M. 9, 49, 51.

अन्तेत्रज्ञ n. Nom. abstr. von अन्तेत्रज्ञ P. 7, 3, 30. — Vgl. अन्तेत्रज्ञ.

अन्तेत्र m. Name einer Pflanze (पर्वतजपीलुवृत्त) BHAR. zu AK. im ÇKDr.
in der Volkssprache आखोर्द RĪĠAN. im ÇKDr. *Croton moluccanum*,
Aleurites triloba Suçr. — Vgl. अन्तेत्र, अन्तेत्रक, अन्तेत्र, अन्तेत्र.

अन्तेत्रक m. = अन्तेत्र AK. 2, 4, 2, 9.

अन्तेत्रक m. = अन्तेत्र RATNAM. im ÇKDr.

अन्तेत्र (3. अ + तेत्र) 1) adj. unerschütterlich. — 2) m. Pfosten zum
Anbinden eines Elefanten TRIK. 2, 8, 39.

अन्तेत्र (3. अ + तेत्र) 1) adj. unerschütterlich. Vom Meere: R. 2, 18, 6,
6, 23, 19. von einem Heere: 6, 1, 19, 35, 6. इत्वाकुकुलमन्तेत्रायम् 2, 12, 86. —
2) m. Name eines Buddha, SUVARNA. BHAR. Intr. I, 117. 530. — 3) eine
ungeheure Zahl bei den Buddhisten = 100 vivara, LALITAY. 140. 143.

अन्तेत्रराज (अन्तेत्र + राज) m. Name eines Mannes LALITAY.

अन्तेत्रिणी f. ein vollständiges Heer, bestehend aus 10 ankiat oder
aus 21870 Elefanten, eben so vielen Wagen, 65610 Pferden und 109350
Fusssoldaten, AK. 2, 8, 2, 49. H. 749. N. 1, 3. इयमन्तेत्रिणी सेना (viel-
leicht ein Compositum) R. 1, 22, 3. — Zusammeng. aus अन्त (vgl. अन्तवाट)
und अन्तिनी Vārtt. 2. zu P. 6, 1, 89.

1. अन्तेत्र adj. in die Quere gehend. Nur der adverbiale Instr. अन्तेत्रायै ist
zu belegen: 1) in die Quere: तानन्तेत्रायै सं तन्दन्ति यन्तेत्रायै न शंक्रुयादपि
समीचः ÇAT. Br. 3, 5, 4, 13. (Sch. = वक्रमार्गेषु, Sch. zu KĀT. 8, 5, 11 =
कौटिल्येन) अथ यन्तेत्रायैव्यति । सन्तेत्रायै च दोक्षो दन्तिनायाश्च ओषोर्दे-
न्तिनास्यं च दोक्षः संव्यायाश्च ओषोस्तस्मादयं पश्चरन्तेत्रायै पदे कर्त्यथ यत्स-
म्यगव्येत्समीचो द्वैवापं पशुः पदे कर्त् 3, 8, 2, 27. अन्तेत्रायै दन्तिनां ऽमे
ओषोर्दे ओषोर्देनामे KĀT. 5, 4, 14. (VS. 5, 12). — 2) in verkehrter, sünd-
hafter Weise: स यद्यनेन किंचिदन्तेत्रायै कृतं (vielleicht als Compositum
अन्तेत्रायैकृतं zu lesen; ÇAMKAR. sieht ein अन्तेत्रं darin) भवति तस्मादेनं स-
र्वस्मात्पुत्रो मुञ्चति BHAR. Ār. Up. 1, 5, 17. — Von अन्तेत्र.

2. अन्तेत्र n. Uṅ. 3, 17. Zeit ÇKDr. (अन्तेत्र).

अन्तेत्रायैकृत (अन्तेत्रायै [s. 1. अन्तेत्रायै] + कृत) adj. in sündhafter Weise
hassend: जिनो यो मित्रावरुणावभिधुगणो न वां सुनोत्यन्तेत्रायैधुक् । स्वयं स
यत्नं कृदये नि धत्त आप यदो कौत्रभिर्हतावा ॥ RV. 1, 122, 9.

अन्तेत्रायैवन् (अन्तेत्रायै + यवन्) adj. in die Quere, in horizontaler Rich-
tung gehend: अन्तेत्रायैवानो वरुह्यन्तेत्रायै पततः । धातारः स्तुवते वयः ॥
RV. 8, 7, 35.

अन्तेत्र m. Name einer Pflanze, *Buchanania latifolia* (प्रियाल) RĪĠAN.
im ÇKDr.

अन्तेत्र m. Grille, Laune (असद्रुद्रः) TRIK. 3, 2, 4. (असद्रुद्रकारः ÇKDr.).

अन्तेत्र (3. अ + खएउ) adj. ungetheilt, ganz AK. 3, 2, 15. H. 1433. ÇIK. 43.
BĀLAB. 29. अन्तेत्राद्वाद्दशी der 12te Tag in der 1sten Hälfte des Monats
Mārgaśirsha, As. Res. III, 268.

अन्तेत्र (3. अ + खएउ) m. Zeit ÇABDAK. im ÇKDr.

अन्तेत्रतर्तु (अन्तेत्रतर्तु [3. अ + खएउत] + तर्तु) adj. fruchttragend
(eig. dessen Jahreszeit nicht zunichte wird) ÇABDAK. im ÇKDr.

अन्तेत्रत् (3. अ + खन्त् part. praes. von खन्) adj. nicht grabend: वन्-
स्पतिं वन् आस्थोपयधं नि पू र्दधिधमखन्त् उत्सम् RV. 10, 101, 11.

अन्तेत्र (3. अ + खर्व) adj. nicht kurz, nicht klein: मह्यमखर्वं सुधितं सु-
पेशंसं दधात युञ्जिषेष्वा RV. 7, 32, 13.

अन्तेत्र (3. अ + खात part. praes. pass. von खन्) 1) adj. a) nicht ge-
graben. — b) nicht vergraben: खातमखातमूत सक्रमपमिरेव धन्वन्ति जं-
जास ते विषम् AV. 5, 13, 2. — 2) n. ein nicht-grabener, ein natürlicher
Teich AK. 1, 2, 2, 27. H. 1094. m. AMARAB. im ÇKDr.

अन्तेत्र (3. अ + खिद्र) adj. unermüdetlich.